Journal of Social Issues and Development (JSID)
(Himalayan Ecological Research Institute for Training and Grassroots Enhancement (HERITAGE)
ISSN: 2583-6994 (Vol. 3 & 4)
Special Combined Issue (September 2025 — April 2026. pp. 214-219)

सामाजिक प्रगति में मीडिया साक्षरता की भूमिका

प्रेम प्रताप सिंह*
संजय पाण्डेय**

शोध सार

आज के युग में मीडिया समाज के निर्माण, दिशा–निर्देशन व दैनिक क्रिया–कलापों में महत्व्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, जिससे यह सामाजिक परिवर्तन का सबसे सशक्त साधन बन चुका है। सूचना और संचार तकनीक ने जिस तीव्रता से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है, उसने नागरिकों के समक्ष नए अवसरों के साथ–साथ चुनौतियाँ भी प्रस्तुत की हैं। फेक न्यूज, दुष्प्रचार, अफवाह और ट्रोल संस्कृति ने लोकतांत्रिक व्यवस्था और सामाजिक सौहार्द पर गहरा असर डाला है। इस संदर्भ में मीडिया साक्षरता केवल एक शैक्षिक अवधारणा नहीं बल्कि सामाजिक प्रगति और लोकतांत्रिक सुदृढ़ता का अनिवार्य उपकरण है। प्रस्तुत शोध आलेख में मीडिया साक्षरता की अवधारणा, उसकी सामाजिक प्रासंगिकता, भारतीय संदर्भ में चुनौतियाँ और उनके संभावित समाधान पर प्रकाश डाला गया है। यह शोध डिजिटल मीडिया के विशेष संदर्भ में है।

मुख्य शब्दः मीडिया, साक्षरता, सामाजिक, डिजिटल।

* शोधार्थी, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, विवेकानंद ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** सह शोध निर्देशक, विभागाध्यक्ष, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, ग्राफिक एरा विश्वविद्यालय, हलद्वानी, नैनीताल।

प्रस्तावना

डिजिटल युग (Digital Era) के लोकतांत्रिक समाज में मीडिया को समाज का "चौथा स्तंभ" कहा जाना केवल औपचारिक उपमा नहीं है, बल्कि यह नागरिक जीवन की वास्तविकता भी बन गई है। आज अखबार, रेडियो, टेलीविजन और सोशल मीडिया जैसे प्लेटफॉर्म केवल सूचना का स्रोत नहीं रहे, बल्कि वे व्यक्ति के विचार, व्यवहार और सामाजिक संबंधों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर रहे हैं।

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में जहाँ लगभग 85 करोड़ इंटरनेट उपभोक्ता हैं (TRAI रिपोर्ट, 2023), वहाँ मीडिया की पहुँच गाँव–गाँव तक हो चुकी है। किंतु नागरिकों के पास सूचनाओं की प्रामाणिकता परखने की क्षमता सीमित है। यही कारण है कि बिना मीडिया साक्षरता के समाज फेक न्यूज, साम्प्रदायिक उकसावे और झूठे प्रचार का शिकार हो सकता है। अतः मीडिया साक्षरता लोकतांत्रिक व्यवस्था, सामाजिक न्याय और समावेशी विकास की आधारशिला है।

मीडिया साक्षरता का अर्थ

यहां मीडिया साक्षरता का अर्थ है मीडिया के प्रति लोगों का जागरूक होना उसके सकारात्मक व नकारात्पक प्रभावों को समझना, उसकी उपयोगिता व अनुपयोगिता को समझना, विभिन्न मीडिया माध्यमों से प्राप्त संदेशों को समझने, उनकी आलोचनात्मक समीक्षा करने, तथ्यों और अफवाहों में अंतर करने तथा समाजहित में उनका रचनात्मक उपयोग करने की क्षमता।

निम्न समग्र प्रक्रियाएं जिसमें शामिल हैं वही मीडिया साक्षर कह लायेगा –

1. आलोचनात्मक सोच
2. सूचनाओं की सत्यता की जाँच
3. वैकल्पिक दृष्टिकोणों का मूल्यांकन
4. प्रौद्योगिकी के विवेकपूर्ण उपयोग की क्षमता

भारत के परिप्रेक्ष्य में मीडिया साक्षरता विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ भाषाई विविधता, ग्रामीण–शहरी असमानता और डिजिटल विभाजन जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं।

सामाजिक प्रगति में मीडिया साक्षरता की भूमिका निम्ध्नवत है–

(क) लोकतांत्रिक मूल्य और मीडिया

हम अच्छी तरह से जानते हैं कि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। चुनावों में

सोशल मीडिया और समाचार चौनलों की भूमिका निर्णायक हो चुकी है। मीडिया साक्षर नागरिक प्रोपेगेंडा या भ्रामक प्रचार से प्रभावित हुए बिना तथ्यों के आधार पर निर्णय लेते हैं। इससे लोकतंत्र अधिक पारदर्शी और उत्तरदायी बनता है।

जनता की भागीदारी, पारदर्शिता, जवाबदेही और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता। इन सभी स्तंभों को सशक्त बनाने का कार्य मीडिया करती है। यही कारण है कि मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा गया है। यह शासन, जनता और समाज के बीच संवाद का सेतु बनकर लोकतांत्रिक मूल्यों को जीवित रखती है।

1. **लोकमत निर्माण में भूमिका–** लोकतंत्र में लोकमत का विशेष महत्व होता है। मीडिया जन–सूचना का प्रमुख माध्यम बनकर जनता को नीतियों, योजनाओं और घटनाओं की जानकारी देती है। समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन, सोशल मीडिया आदि प्लेटफार्म जनता को जागरूक करते हैं और उन्हें सही निर्णय लेने में सक्षम बनाते हैं।
2. **सत्ता पर निगरानी–** मीडिया शासन की कार्यप्रणाली पर निगरानी रखती है। जब प्रशासनिक या राजनीतिक तंत्र में कोई अनियमितता होती है, तो मीडिया उसे उजागर कर जनता के सामने लाती है। यही प्रक्रिया जवाबदेही (Accountability) को सुनिश्चित करती है और सत्ता को पारदर्शी बनाए रखती है।
3. **अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का संवाहक–** लोकतंत्र में हर नागरिक को अपनी बात कहने का अधिकार है, और मीडिया उस अधिकार का मंच प्रदान करती है। चाहे वह आम नागरिक हो, सामाजिक कार्यकर्ता या कोई संगठन कृ मीडिया उनके विचारों को समाज तक पहुँचाने का माध्यम बनती है।
4. **सामाजिक चेतना और परिवर्तन का साधन–** मीडिया केवल सूचना का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का प्रेरक भी है। बाल विवाह, दहेज, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण जैसे मुद्दों पर मीडिया ने समाज को सोचने और बदलने के लिए प्रेरित किया है।
5. **नई चुनौतियाँ और जिम्मेदारियाँ–** आज के डिजिटल युग में जहाँ सूचना का प्रवाह तेज है, वहीं फेक न्यूज, पक्षपात और व्यावसायिकता जैसी चुनौतियाँ भी हैं। लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए मीडिया को निष्पक्षता, सत्यता और जिम्मेदारी के सिद्धांतों का पालन करना आवश्यक है।

(ख) सामाजिक जागरूकता का विस्तार

स्वास्थ्य (जैसे– कोविड–19 वैक्सीनेशन), शिक्षा (ऑनलाइन लर्निंग), लैंगिक समानता (बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान) और पर्यावरण संरक्षण (स्वच्छ भारत मिशन) जैसे क्षेत्रों में

मीडिया साक्षरता नागरिकों को सही जानकारी ग्रहण करने और समाजहित में साझा करने के लिए प्रेरित करती है।

(ग) सांस्कृतिक संरक्षण

ग्लोबलाइजेशन और सोशल मीडिया के प्रभाव से स्थानीय संस्कृति और भाषाएँ संकट में हैं। मीडिया साक्षर समाज पारंपरिक कला, साहित्य और लोकसंगीत को प्रामाणिक रूप में नई पीढ़ी तक पहुँचा सकता है। जैसे– उत्तराखंड का सामुदायिक रेडियो हैलो हल्द्वानी 91.2 FM स्थानीय बोली और संस्कृति को जीवंत रखने का कार्य कर रहा है।

(घ) आर्थिक विकास में सहयोग

डिजिटल बैंकिंग, ई–कॉमर्स और ऑनलाइन शिक्षा के दौर में मीडिया साक्षरता लोगों को तकनीकी दक्ष बनाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता अभियान और कॉमन सर्विस सेंटर (CSC) इसी दिशा में कार्यरत हैं। इससे आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना साकार होती है।

(ङ) फेक न्यूज नियंत्रण

भारतीय समाज में अफवाहें अक्सर साम्प्रदायिक तनाव और हिंसा का कारण बनती रही हैं। मीडिया साक्षर नागरिक फैक्ट–चेकिंग उपकरणों (जैसे–PIB Fact Check, Alt News) का उपयोग कर झूठी खबरों की पहचान कर सकते हैं। इससे सामाजिक सौहार्द और शांति बनी रहती है।

भारत में मीडिया साक्षरता की चुनौतियाँ

1. **डिजिटल डिवाइड (ग्रामीण–शहरी असमानता):** शहरों में इंटरनेट और स्मार्टफोन की पहुँच अधिक है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह अभी सीमित है।
2. **शैक्षिक पाठ्यक्रम में उपेक्षा:** स्कूल और विश्वविद्यालय स्तर पर मीडिया साक्षरता औपचारिक रूप से शामिल नहीं है।
3. **सूचना अतिरेक:** तेजी से बदलते समाचार चक्र में सत्यापन कठिन हो जाता है।
4. **भाषाई विविधता:** भारत में 22 से अधिक भाषाएँ और सैकड़ों बोलियाँ हैं। स्थानीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण मीडिया सामग्री की कमी है।
5. **तकनीकी कौशल की कमी:** ग्रामीण और बुजुर्ग आबादी डिजिटल सुरक्षा और फैक्ट–चेकिंग उपकरणों से अपरिचित है।

मीडिया कई तरह से सामाजिक जागरूकता में भूमिका निभा सकता है :

- **सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता :** मीडिया अपने मंचों/माध्यमों का उपयोग गरीबी,

असमानता और भेदभाव जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए कर सकता है। इससे जनता को जागरूक करने, शिक्षित करने और बदलाव के लिए समर्थन जुटाने में मदद मिल सकती है।

- **कार्रवाई के लिए लागों को प्रेरित करना:** मीडिया का उपयोग सामाजिक मुद्दों पर कार्रवाई करने के लिए लोगों को प्रेरित करने के लिए किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, मीडिया का उपयोग सकारात्मक रूप से प्रदर्शन, बहिष्कार और अन्य प्रकार की सक्रियता को बढ़ावा देने के लिए किया जा सकता है।
- **सरकार की जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए :** मीडिया का उपयोग सत्ता में बैठे लोगों को उनके उत्तरदायित्वों के प्रति उन्हें जागरूक करने के लिए किया जा सकता है।

सुझाव

1. **शिक्षा व्यवस्था में समावेशन:** मीडिया साक्षरता को स्कूल–कॉलेज के पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाए।
2. **सरकारी व गैर–सरकारी पहल:** मीडिया जागरूकता अभियान नियमित रूप से चलाए जाएँ।
3. **स्थानीय भाषाओं में सामग्री:** क्षेत्रीय भाषाओं में मीडिया शिक्षा सामग्री और फैक्ट–चेक संसाधन उपलब्ध कराए जाएँ।
4. **डिजिटल सुरक्षा प्रशिक्षण:** नागरिकों को साइबर अपराध, डेटा प्रोटेक्शन और फेक न्यूज की पहचान पर प्रशिक्षण दिया जाए।
5. **सामुदायिक भागीदारी:** सामुदायिक रेडियो, स्वयंसेवी संगठन और स्थानीय पत्रकारिता को प्रोत्साहित किया जाए।

निष्कर्ष

मीडिया साक्षरता केवल एक शैक्षिक अवधारणा नहीं बल्कि सामाजिक प्रगति का आधार है। यह नागरिकों को आलोचनात्मक दृष्टि प्रदान करती है, जिससे वे लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में सक्रिय भाग ले सकें, सामाजिक मुद्दों को समझ सकें, सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित कर सकें और आर्थिक अवसरों का विवेकपूर्ण उपयोग कर सकें। भारतीय समाज के बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में मीडिया साक्षरता और भी प्रासंगिक है। इसके बिना लोकतंत्र कमजोर, सामाजिक ताना–बाना असुरक्षित और विकास अधूरा रह सकता है। अतः शिक्षा संस्थानों, सरकार, मीडिया और नागरिक समाज को मिलकर इसे प्राथमिकता देनी होगी।

मीडिया केवल सूचना का साधन नहीं, बल्कि समाज का दर्पण है। यह समाज की अच्छाइयों और कमियों दोनों को उजागर करता है और लोगों को बेहतर दिशा में सोचने के लिए प्रेरित करता है। अतः सामाजिक जागरूकता के प्रसार में मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और अपरिहार्य है। मीडिया लोकतंत्र की आत्मा है। जब मीडिया निष्पक्ष, संवेदनशील और जिम्मेदार रहती है, तभी लोकतंत्र जीवंत और मजबूत रहता है। इसलिए आवश्यक है कि मीडिया जनहित को सर्वोपरि रखे और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा में अपनी भूमिका सदैव ईमानदारी से निभाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Aufderheide, P. (1993). Media Literacy: A Report of the National Leadership Conference on Media Literacy. Washington, DC: Aspen Institute.
2. Koltay, T. (2011). The media and the literacies: Media literacy, information literacy, digital literacy. Media, Culture & Society, 33(2), 211–221.
3. Livingstone, S. (2004). Media literacy and the challenge of new information and communication technologies. The Communication Review, 7(1), 3–14.
4. Potter, W. J. (2019). Media Literacy. Thousand Oaks, CA: SAGE Publications.
5. Telecom Regulatory Authority of India (2023). Annual Report on Internet and Mobile Subscribers in India. New Delhi: TRAI.
6. Aufderheide, P. (1993). Media Literacy: A Report of the National Leadership Conference on Media Literacy. Washington, DC: Aspen Institute.
7. Koltay, T. (2011). The media and the literacies: Media literacy, information literacy, digital literacy. Media, Culture & Society, 33(2), 211–221.
8. Livingstone, S. (2004). Media literacy and the challenge of new information and communication technologies. The Communication Review, 7(1), 3–14.
9. Potter, W. J. (2019). Media Literacy. Thousand Oaks, CA: SAGE Publications.
10. चौधरी, एस. (2018). भारत में मीडिया साक्षरता और सूचना समाज. नई दिल्लीः भारतीय जनसंचार संस्थान (IIMC) प्रकाशन।
11. जोशी, हरीश (2016). लोकतंत्र और मीडिया की भूमिका. इलाहाबादः लोकभारती प्रकाशन।
12. प्रसाद, के.एम. श्रीवास्तव (2015). मीडिया साक्षरताः एक शैक्षिक दृष्टिकोण. नई दिल्लीः केंद्रिय हिंदी निदेशालय।
13. दूरदर्शन समाचार (2020). फेक न्यूज और मीडिया साक्षरता पर विशेष रिपोर्ट. प्रसार भारती, नई दिल्ली।
14. दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (TRAI) (2023). भारत में इंटरनेट एवं मोबाइल ग्राहकों की वार्षिक रिपोर्ट. नई दिल्लीः TRAI प्रकाशन।